A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

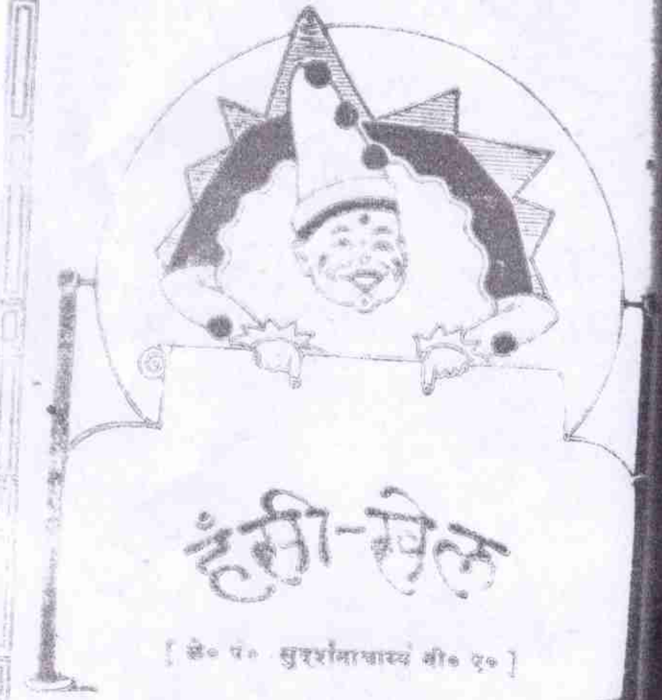

[ले० पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०]

इस पुस्तक में बालक-बालिकाओं के लिये हँसी खेल [illegible] पूरा सामान है। इसी से इसका नाम 'हँसी खेल' रक्खा गया है। इसमें रङ्ग बिरङ्गे ८९ चित्रों से चित्रित छोटे छो[illegible] ६० लेख और कविताएँ हैं। सभी विषय हँसाने वाले हैं। बालक इनको पढ़ कर हँसते हँसते लोट पोट हो जायँगे। एक बार देख कर बालक फिर से नहीं छोड़ेंगे। इसका कवर भी बड़ा सुन्दर है। मूल्य केवल बारह आना है। 'शिशु' के ग्राहकों से नौ आना।

[illegible] १९२६] [सप्तम अङ्क

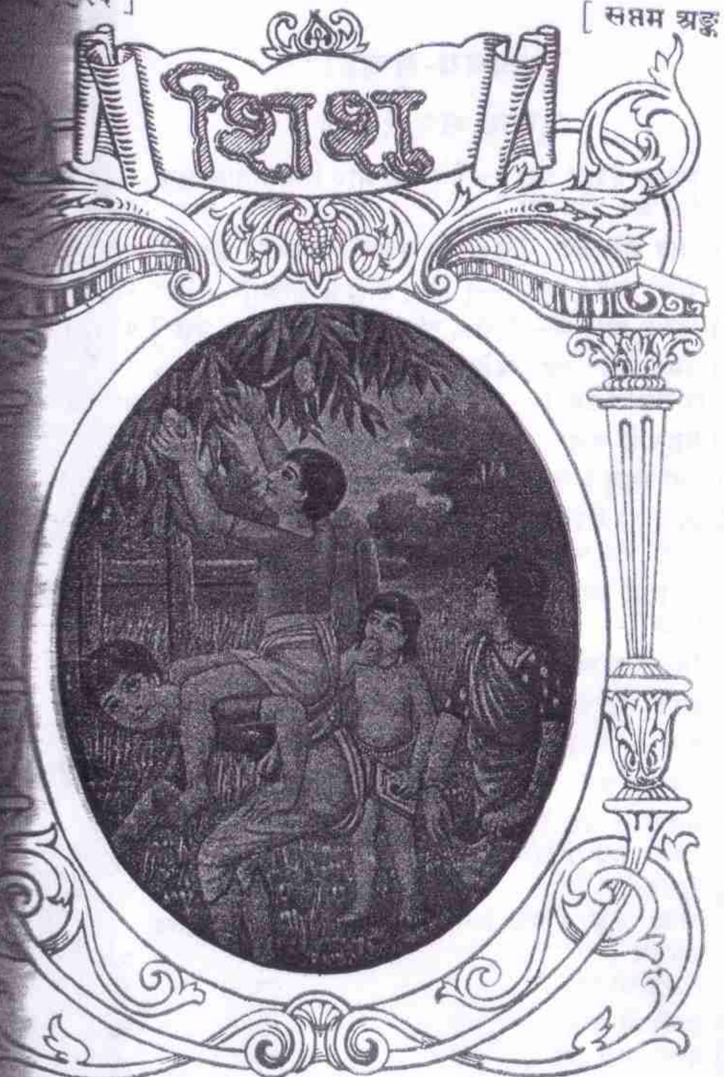

[illegible] मूल्य २)] [इस अङ्क का ≡)

सम्पादक
पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०
सहायक सम्पादक—श्रीनाथसिंह

[illegible] Copy). Three Annas.

विषय-सूची

जूलाई सन् १९२६

(१) भारत देश (पद्य)—[लें०, श्री० गिरजादत्त शुक्ल बी० ए० 'गिरीश'] २४

(२) सत्य की जय [लें०, पं० बनमाली प्रसाद शुक्ल] २५

(३) दोनों भाई (पद्य)—[लें०, बालक कवि] ... २५

(४) बिल्लू और मैं—[लें०, श्री० लक्ष्मण स्वरूप गुप्त] २६

(५) क्या इसे पढ़ सकोगे ? (पद्य)—[लें०, श्री० श्रीनाथ सिंह] २६

(६) बहुरूपी जल २६

(७) वर्षा ऋतु (पद्य)—[लें०, श्री० 'स्वर्ण सहोदर'] २७

(८) जादू की गेंद बुलाने का खेल—[लें०, श्री० राधा कृष्ण बी० ए०] २७

(९) गुड़ियों का जगाना (पद्य)—[लें०, श्री० 'कमल' मिश्र] २७

(१०) चित्रकार और मेंढक २८

(११) भालू महराज २८

(१२) हमारी चित्रावली २८

(१३) ऐब दूर करने वाली गोलियाँ २८

(१४) मेंढक (पद्य)—[लें०, श्री० आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव 'किरीट'] २८

(१५) चुटकुले २९

(१६) सच्ची बात (पद्य)—[लें०, श्री० गनेश प्रसाद टण्डन] २९

(१७) चिट्ठी-चपाती २९

(१८) अनोखी बातें ३०

(१९) बाल-समाचार ३०

(२०) नई पहेलियाँ ३०

'शिशु' पढ़ने वालों के लिये

एक बड़ा सुभीता

रेल के स्टेशनों पर 'शिशु' बेचने का ठेका ह्वीलर कम्पनी को दे दिया गया है। 'शिशु' नीचे लिखे बड़े बड़े स्टेशनों पर बराबर बिकता है—

मुगलसराय, मिर्ज़ापुर, जबलपुर एलाहाबाद, कानपुर, टूँडला, देहली, बनारस, परतापगढ़, फैजाबाद, लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हवड़ा, पटना, मेरठ कैंट, मथुरा जंकशन, आगराफ़ोर्ट, आगरा कैंट, अजमेर, लाहौर, धनबाद, अलीगढ़।

यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि रेल की यात्रा में 'शिशु' जैसा मन बहलाने वाला सस्ता साथी और नहीं मिल सकता। केवल तीन आने में आप को एक प्रति मिल जायगी। बालकों को तो अवश्य ही खरीदना चाहिये।

मैनेजर 'शिशु'।

आप भी अपनी तसवीर 'शिशु' में छपवाइए

'शिशु' में प्रति मास दो चार सुन्दर बालकों की तसवीर छपती हैं। यदि आप बच्चे हैं अर्थात् आप की उम्र १० वर्ष की या इससे कम की है और आप अपनी तस्वीर इसमें छपवाना चाहते हैं तो शीघ्र ही अपनी एक अच्छी सी फोटो भेजिये या अपने किसी छोटे भाई या बहिन की भेजिये। जिसकी फोटो सबसे बढ़िया होगी उसको इनाम भी मिलेगा।

तस्वीर भेजने का पता—

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०,

'शिशु'-कार्य्यालय, इलाहाबाद।

परियों का देश

[ले०—श्रीमती गोपालदेवी]

इस पुस्तक में परियों की २८ बड़ी मनोरञ्जक कहानियाँ हैं। एक बार हाथ में लेकर बालक फिर उसे बिना खतम किये नहीं छोड़ते। बालकों में पढ़ने का शौक पैदा करने के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। मूल्य १) रु० 'शिशु' के ग्राहकों से ।||) आना।

बाल-कवितावली

[ले०—ठाकुर श्रीनाथसिंह]

इस पुस्तक में शिशुओं के पढ़ने योग्य ११२ शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक कविताएँ हैं। यह पुस्तक भी ऐसी है कि बच्चे इसको पाकर नहीं छोड़ते। बड़े प्रेम से बार बार पढ़ते हैं। यहाँ तक कि पढ़ते पढ़ते इसकी कविताओं को रट डालते हैं। बालकों के लिए हिन्दी में अभी तक कोई भी पुस्तक ऐसी नहीं है। मूल्य केवल एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहकों से बारह आना।

मँगाने का पता—

मैनेजर—'शिशु' इलाहाबाद।

'शिशु' के नियम

[१] शिशु हर अंग्रेजी महीने की २५ तारीख को प्रकाशि
होता है।

[२] डाक-व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य
मात्र है।

[३] नमूने की कापी मँगाने वालों को चाहिये कि ≡) क
टिकट भेज कर हमसे नमूना मँगा लें। यदि वे ग्राहक हो
जायँगे तो उन्हें शेष अङ्कों के लिये केवल १॥।-) देना पड़ेगा

[४] ग्राहकों को चाहिए अपना पता पूरा और साफ लिखें
जिससे उनके पास पत्र पहुँचने में गड़बड़ी न पड़े।

[५] वर्तमान समय की राजनीति तथा धार्मिक झगड़ों
से सम्बन्ध रखने वाले लेख इस पत्र में नहीं छापे जाते।

[६] विज्ञापन की छपाई एक बार के लिए प्रति पंक्ति ।)
आधे पृष्ठ के ४) और पूरे पृष्ठ के ७) है। अधिक दिनों के
लिये विज्ञापन छपाना हो तो पत्र-व्यवहार करके तै कर
चाहिए।

[७] बैरङ्ग पत्र नहीं लिए जायँगे। जवाबी कार्ड या आध
आने का टिकट आये बिना किसी के पत्र का उत्तर नहीं
दिया जायगा।

[८] लेख, परिवर्त्तन के पत्र, समालोचना के लिए पुस्तकें
आदि, रुपया तथा और सब तरह के 'शिशु' सम्बन्धी पत्र
इस पते पर आने चाहिए—

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०,
'शिशु'-कार्य्यालय, इलाहाबाद।

शिशु

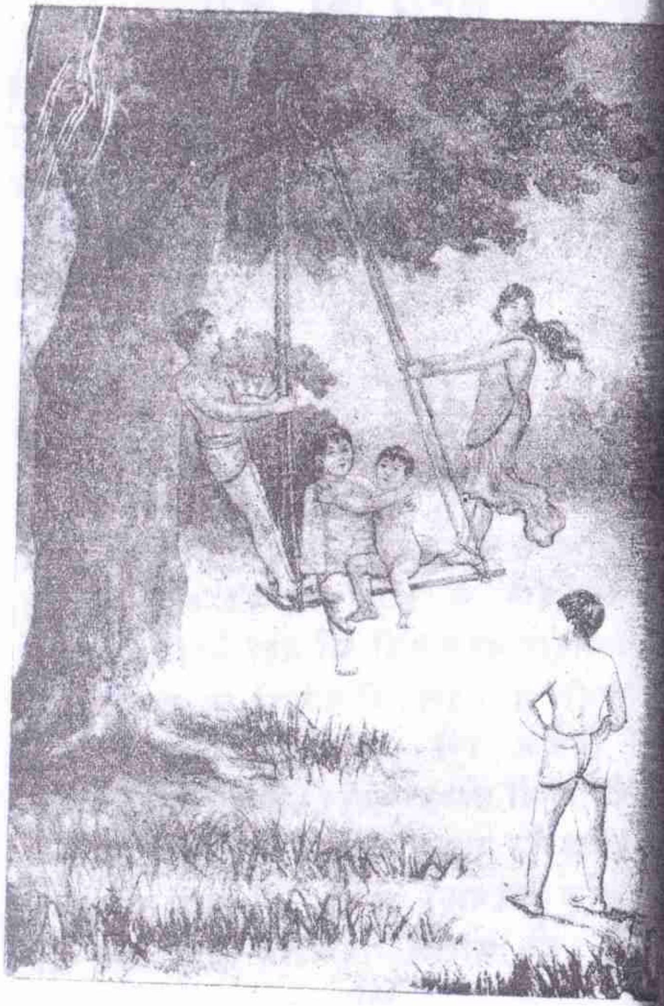

ऊपर घिरी घटा है काली, नीचे नाच रही हरियाली।
लड़कों ने डाला है झूला, देखो कैसी छटा निराली॥

शिशु

...हो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान॥
...हीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत महतारी॥

...दश वर्ष } प्रयाग, जूलाई १९२६ { सप्तम अङ्क

भारत देश

भारत देश निराला है।
सब देशों से आला है॥
प्यारा बड़ा दुलारा है।
हाँ, आँखों का तारा है॥

इस डाली से उस डाली पर ।
काली कोयल फुदक २ कर ॥
मीठे स्वर में गाती है ।
सब को यही सुनाती है ॥

भारत देश निराला है ।
सब देशों से आला है ॥
हवा यहाँ की प्यारी है ।
धरती ही कुछ न्यारी है ॥

फल फूलों की ढेरी है ।
खेती घनी घनेरी है ॥
ऋद्धि सिद्धि का डेरा है ।
सुख का यहाँ बसेरा है ॥

ऋषि मुनियों ने गाया है ।
भारत सब को भाया है ॥
भारत देश निराला है ।
सब देशों से आला है ॥

—'गिरीश'

सत्य की जय

गड़रिये का एक लड़का था। वह भेड़ चराने के लिये राजा के यहाँ नौकर हो या था। उसे लिखना पढ़ना नहीं आता था पर च बोलना न जाने कहां से सीख लिया था। की सचाई के कारण राजा साहब बहुत खुश ते थे।

एक दिन राजा के यहाँ एक जमीदार या। उसके साथ उसकी लड़की भी आई । वह देखने में बहुत सुन्दर थी।

साँझ के समय राजा साहब दालान में बैठे जमीदार से इधर उधर की बातें कर रहे जमीदार की लड़की भी वहाँ बैठी हुई बातें रही थी। इतने में नौकरों के सम्बन्ध की निकल पड़ी। जमीदार ने कहा कि आज के सभी नौकर चाकर झूठे होते हैं। यह राजा को पसन्द नहीं आई। उन्होंने कहा— भेड़ चरवाहा कभी झूठ नहीं बोलता। नी भी लालच दिखाओ वह सच ही

बोलेगा। अपनी बात कटती देख कर जमीं
को बुरा लगा। वह तन कर बोला कि मैं आ
गड़रिये को झूँठ बोलते हुए दिखादूँ तो ?
पर राजा साहब बिगड़ पड़े और उन्होंने
कि यदि मेरा गड़रिया झूँठ बोलेगा तो
अपना आधा राज तुम्हें दे दूँगा। पर
रखो, यदि तुम उसे झूठ नहीं बोला सके
तुम्हारी आधी जमींदारी और तुम्हारी लड़की
ले लूँगा। जमीदार ने सर्त मंजूर कर ली।

कुछ दिन के बाद जमीदार बनिये का
बना कर गड़रिये की टोह में बाहर निकला
गड़रिया वृक्ष की छाँह में बैठे हुए बाँसुरी
रहा था। पास ही राजा की भेड़ चर रही
गड़रिये को देखते ही बनावटी बनिये ने
कर सलाम किया और उसके सामने पाँच मु
रख कर नम्रता से बोला कि भाई मेरा ल
बहुत बीमार है। ओझा जी कहते हैं कि रा
की भेंड़ का बलिदान करने से लड़का चंगा
जावेगा। इसके सिवा उसको बचाने का
दूसरा उपाय नहीं है। दया करके इन मुहरों

और उनके बदले में राजा की एक भेंड़
। इसमें हमारा तुम्हारा दोनों का कल्याण
है। यह सुनते ही गड़रिया बड़े असमंजस में
गया। उसे चुप देख कर बनावटी बनिया
—"भाई बोलते क्यों नही ? क्या मेरी बुरी
पर तुम्हें दया नहीं आती।" गड़रिये ने
दिया कि राजा साहबसे पूछे बिना मैं
की भेंड़ नही बेच सकता। चाहो तो तुम्हारा
दूर करने के लिये राजा साहब से कह कर
तुम्हें एक भेड़ दिला सकता हूं। बनावटी बनिये
को यह बात पसन्द नहीं आई। उसने कहा कि
भाई, राजा साहब से मेरी शत्रुता है मुँह माँगी
कीमत देने पर भी वे मुझे अपनी भेंड़ नहीं
देवेंगे। क्या ही अच्छा होता यदि मुहरों के
बदले में मुझे एक भेड़ दे देते और पूछने पर
राजा साहब से बहाना कर देते कि आप की
एक भेड़ जंगल में कहीं भटक गई है। बहुत
ढूंढा पर उसका पता नहीं चला। इस उपाय से
हम दोनों को लाभ होगा और राजा साहब
तुम्हारे ऊपर सन्देह भी नहीं करेंगे। इसे सुन

कर गड़रिये का लड़का खिलखिला पड़ा और बनिये को चिढ़ाते हुए बोला कि साह जी, मैं झूठ बोल कर राजा साहब को ठग सकता हूँ पर भगवान को नहीं ठग सकता जो सब जगह सब को देखता है और सब की बात सुनता है।

जमींदार संकट में पड़गया। तब उसकी लड़की गड़रिये को झूठा बनाने के इरादे से देहाती लड़की का स्वाँग बना कर घर से बाहिर निकली। वह एक हाथ में शराब की बोतल और दूसरे में मिट्टी का प्याला धरे थी। जब वह गड़रिये के पास से होकर निकली तब गड़रिये ने चाहा कि उसे रोक लूँ और प्रेम की दो बातें करके अपना जी बहलाऊँ। लड़की भी यही चाहती थी; इसलिये गड़रिये के पुकारते ही वह पास चली गई। उसकी सुन्दरता ने जादू का काम किया। गड़रिया उसकी जाल में फँस गया और उसे अपनी स्त्री बनाने के लिये उससे अरज मारूज करने लगा। लड़की बड़ी चतुर थी अपना काम बनाने के लिये पहिले वह राजी नहीं हुई। पर जब उसने देखा कि गड़रिया

उसकी शर्तों को मानने के लिये तैयार है तब उसे थोड़ी सी शराब पिला कर बोली—"राजा की एक भेड़ मुझे भेंट करोगे तो मैं आठ दिन बाद तुमसे व्याह कर लूंगी। पर खबरदार, सच्ची बात राजा जी से नहीं कहना। यदि वे भेंड़ के सम्बन्ध में पूछें तो कह देना कि वह भेड़िये का शिकार हो गयी। सच्ची बात बता दोगे तो मैं तुमसे व्याह नहीं करूँगी।" गड़रिया नशे में चूर था, उसने लड़की की बात मान ली और उसे एक भेड़ देकर शादी की बात चीत पक्की कर ली।

जमींदार अपनी लड़की की चतुराई से बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त राजा के पास गया और अकड़ कर बोला कि आप के गड़रिये ने आपकी एक भेड़ बेच दी है! जब वह आपके पास आवे तब उससे भेंड़ के सम्बन्ध में पूछिये। वह जरूर झूठ बोलेगा। राजा को भरोसा था कि उसकी हार नहीं होगी। गड़रिया अपने प्राण के लिये भी झूठ नहीं बोलेगा। इसलिये जमींदार की बात सुन कर वह उदास नहीं हुआ।

सांझ के समय गडरिया भेड़ हाँकते हु
महल में आया। राजा, जमीदार और लड़
सब आँगन में बैठे थे। गडरिये को देखते ही रा
ने भेड़ों के विषय में पूछ ताछ की। गडरिये
उत्तर दिया कि महाराज मैंने बिना पूछे आप
एक भेड़ बेच दी है। यह सुन राजा के मन
क्रोध नहीं आया। वे हँसते हुए बोले कि भे
की जो कीमत तुम्हें मिली है उसे मेरे साम
रखो। गडरिया ने गिड़गिड़ा कर उत्तर दिया कि
महाराज आज से आठवें दिन इस लड़की से
मेरा व्याह होगा, यही आप की भेड़ का मूल्य
है। गडरिये के उत्तर से राजा खुश हुआ पर
जमीदार और उसकी लड़की का मुँह उतर गया।
राजा साहब ने जमीदार की लड़की का व्याह
गडरिये के साथ करा दिया और उसकी आधी
जमीदारी दहेज में दिला दिया।

सच बोलने की सदा जय होती है।

--बनमाली प्रसाद शुक्ल।

दोनों भाई

चुच्चू बुच्चू दो चूहे थे,
थे वे भाई भाई।

खेल कूद ही में दोनों ने,
थी सब उमर बिताई॥

उनकी चतुराई से थी अति,
बिल्ली भी चकराती।

उन्हें पकड़ने जो जाता,
उस पर ही आफत आती॥

इस प्रकार वे दोनों भाई,
मद में अपने भूले।

जहाँ चाहते थे जाते थे,
निर्भय फूले फूले॥

एक रोज चाहा दोनों ने,
उस थैले को काटा।

धरा तिपाई पर था,
जिसमें भरा हुआ था आटा॥

देखें कौन काट देता है,
इस थैले को पहले।
सोच यही वे दोनों भाई,
एक साथ ही उछले ॥

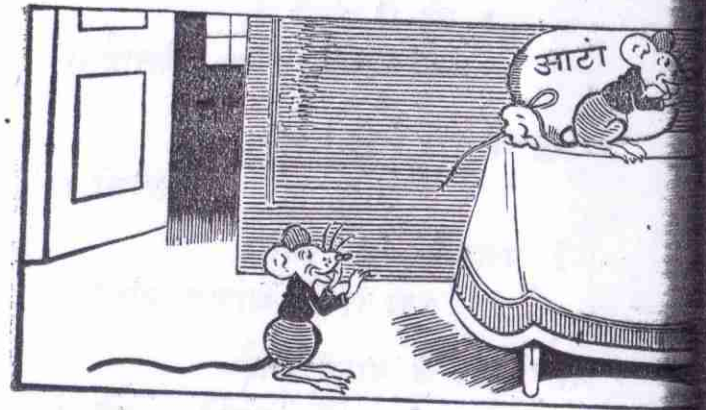

चुच्चू तो चढ़ गया किन्तु,
बुच्चू न सका जा ऊपर।
उसने सोचा चुच्चू को भी,
क्यों न खींच लूँ भूपर ॥
लटकी थी नीचे को डोरी,
थैले के फन्दे की।

खींचा उसको बुच्चू ने कह—
जीत हुई बन्दे की ॥

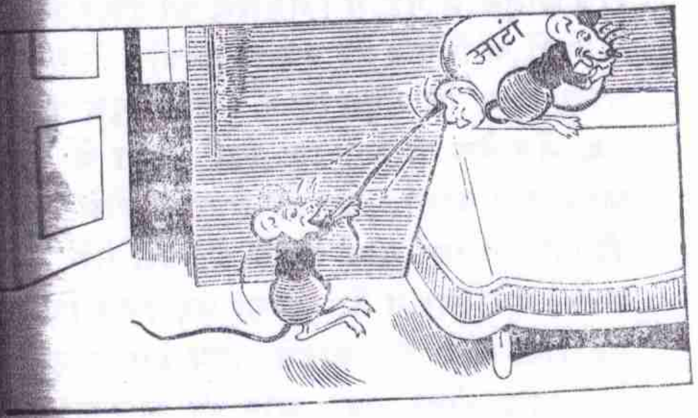

बात हुई यह, डोरी को था,
चुच्चू की दुम जाना।
खींच उसे चाहा था उसने,
उसको खूब छकाना ॥
किन्तु हुआ कुछ का कुछ ज्योंही
फन्दा खुल कर सरका।
जल की मोटी धार की तरह,
आटा उस पर ढरका ॥

नाक कान मुँह गया सभी भर
छका आप ही चुच्चू ।
अरे हुआ क्या तुमको भाई,
चूँ चूँ बोला चुच्चू ॥

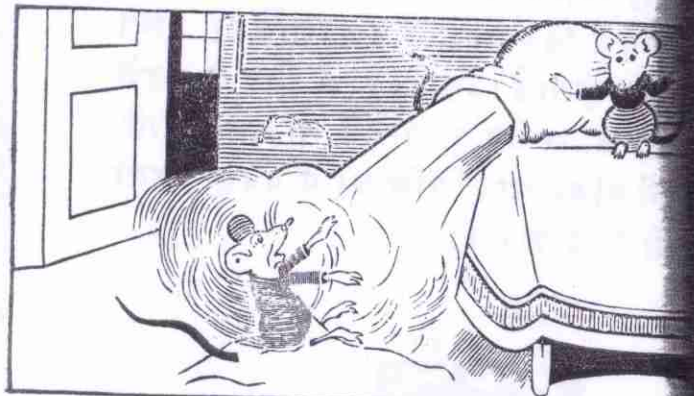

आपस में ही अगर करोगे,
तुम ऐसी चतुराई ।
पछताना होगा ऊपर से,
लोग हसेंगे भाई ॥

—बालक कवि

—

बिल्लू और मैं

[रेल कैसे चलती है ?]

कल बिल्लू और मैं घूमते घूमते रेल की सड़क के पास जा निकले । उधर से एक रेल गाड़ी आ रही थी । बिल्लू उसे देखने के लिये ठहर गया । जब रेलगाड़ी चली गई तो मैंने बिल्लू से पूछा—"बिल्लू ! तुम्हें खबर है रेलगाड़ी कैसे चलती है ?"

बिल्लू बोला—"हां, रेलगाड़ी को एन्जिन चलाता है ।"

मैंने पूछा—"और एन्जिन कैसे चलता है !"

बिल्लू—"एन्जिन भाप की जोर से चलता है ।"

मैंने कहा—"मैं यही तो पूछना चाहता हूँ कि भाप एन्जिन को किस तरह चलाती है !"

बिल्लू कहने लगा—"जिस तरह भाप जोर मार कर पतीली के ऊपर से ढक्कन हटा देती है, इसी तरह एन्जिन को भी आगे को धकेलती होगी ।"

मैंने कहा--"हाँ, भाप में जोर बहुत होता है और जो चीज़ उसे फैलने से रोके उस चीज़ को वह दूर हटाने या फाड़ डालने की कोशिश करती है। परन्तु बिना किसी मशीन के गाड़ी को लगातार नही चला सकती। जिस मशीन द्वारा भाप का जोर गाड़ी के पहियों को घुमाता है उसे एन्जिन कहते हैं। आज एन्जिन का थोड़ा सा हाल मैं तुम्हें बताता हूँ।

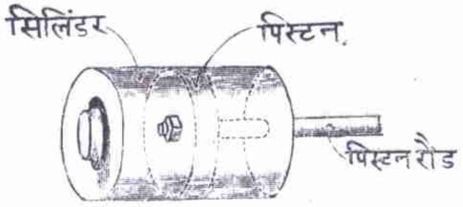

(चित्र सं० १)

"तुमने होली खेलने की पिचकारी देखी है न? उसमें एक डट्टा होता है और डट्टे के साथ एक डंडी लगी रहती है जिसको ऊपर नीचे करने से डट्टा भी ऊपर नीचे होता है। एन्जिन में भी ऐसी ही एक बड़ी लोहे की पिचकारी होती है जिसे सिलिंडर (Cylinder) कहते हैं।

सिलिंडर में लोहे का डट्टा होता है जिसे पिस्टन (Piston.) कहते हैं, और पिस्टन के साथ एक मज़बूत लोहे की डंडी लगी रहती है जिसे पिस्टन रौड (Pistonrod) कहते हैं। (देखो-चि० सं १) पिचकारी में तो पानी खेंचने के लिये नीचे एक छिद्र होता है पर सिलिंडर दोनो ओर से बन्द होता है। सिलिन्डर में छिद्र के बदले दोनों सिरों के समीप दो नलियें सी लगी रहती हैं। जिनमें होकर भाप सिलिन्डर में प्रवेश करती है। (देखो चित्र सं० २)

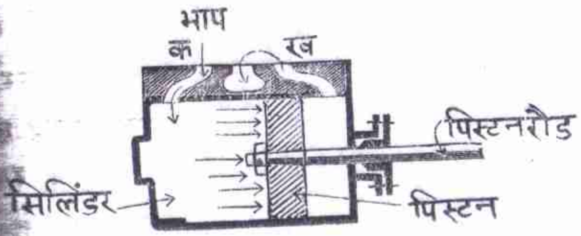

(चित्र सं० २)

यदि एक नली 'क' में से भाप आने दें और दूसरी नली 'ख' को खुली छोड़ दें तो भाप के जोर से पिस्टन सरक कर एक सिरे तक चली

जायगी। अब यदि दूसरी नली 'ख' में से भाप आने दें और 'क' को खुला छोड़ दें तो भाप पिस्टन को फिर दूसरे सिरे तक धकेल दे जायगी। इसी तरह यदि ठीक समय पर बारी बारी एक नली को खुला छोड़ दें और दूसरी में से भाप आने दें तो पिस्टन लगातार बायें से दायें और दायें से बायें को चलती रहेगी और क्योंकि पिस्टन रौड पिस्टन के साथ जुड़ी हुई है वह भी लगातार आगे पीछे होती रहेगी।

सिलिंडर के साथ ऐसा प्रबन्ध होता है कि जब पिस्टन एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच जाती है तो भाप अपने आप दूसरी नली में से आने लगती है और पहिली नली का सम्बन्ध हवा से हो जाता है। अतएव पिस्टन रौड लगातार आगे पीछे होती रहती है। हर एक रेल के एन्जिन में प्रायः ऐसे ही सिलिन्डर होते हैं।"

बिल्लू—"परन्तु इस एन्जिन में तो केवल एक ही था।"

मैंने कहा—"नहीं, जिसे तुम एन्जिन सिलिन्डर समझते हो वह तो बायलर (Boiler) कह-

लाता है। बायलर में तो केवल पानी की भाप बन बन कर इकट्ठी होती रहती है। सिलिंडर तो नीचे पहियों के पास होता है।"

बिल्लू—"तो क्या इस गोल और लम्बे वाले काले हिस्से को जिसमें से धुआं निकलता रहता है एञ्जिन नहीं कहते?"

मैंने कहा—"वैसे तो प्रायः लोग इसी को एञ्जिन कहते हैं पर यह ठीक नहीं। एञ्जिन तो केवल उस मशीन को कहते हैं जिसके द्वारा भाप अथवा गैस का जोर पहियों को घुमाता है। इसलिए वास्तव में केवल दोनों सिलिंडरों और पहियों को मिलाकर एञ्जिन कहना चाहिये।

बिल्लू—"तो क्या बिना बायलर के भी एञ्जिन होते हैं?"

मैंने कहा—"क्यों नहीं, केवल भाप से चलने वाले एन्जिनों को बायलर की आवश्यकता होती है। गैस, पैट्रोल और मिट्टी के तेल से चलने वाले एञ्जिनों के साथ

बायलर नहीं होता। क्या तुमने मोटर बाइसिकल के एञ्जिन को नहीं देखा ?"

बिल्लू—"मोटर बाइसिकल को तो एन्जिन नहीं खेंचता, वह तो अपने आप चलता है।"

मैं—"हां, मोटर बाइसिकल में रेल का सा एञ्जिन तो नहीं होता, पर कोई चीज अपने आप कैसे चल सकती है। पैट्रोल का ज़ोर—बिना एञ्जिन के बाइसिकल के पहियों को कैसे घुमा सक्ता है। यदि तुम ध्यान से देखो तो मोटर बाइसिकल में भी एक सिलिंडर, पिस्टन और पिस्टन रौड होते हैं।"

बिल्लू—"इन चीजों से पहिया कैसे घूमता है।"

मैंने कहा—"चलो घर चल कर यह बात मैं तुम्हें समझाऊँगा।"

(शेष फिर)

—लक्ष्मणस्वरूप गुप्त

क्या इसे पढ़ सकोगे ?

[जब मैं यह कविता लिख चुका तो एक लड़के ने हर दूसरी लाइन का आखिरी शब्द मिटा दिया पर तब भी मैंने इसे ठीक ठीक पढ़ लिया। बालको! तुम भी तो पढ़ो और सोचो कि क्या छूट गया है, बड़ा मज़ा आएगा। —लेखक]

थी वह लड़की बड़ी दुलारी।
पहने थी रेशम की —
दर्पण देख सदा खुश होती।
क्योंकि जड़े थे नथ में —
घर आते जब योगी ज्ञानी।
उन्हें पिलाया करती —
आलस में न बिताती थी दिन।
सकती थी सौ तक गिनती —
कभी न घर में करती दङ्गा।
जाती रोज नहाने —

आती थी जब चूड़ी वाली।
खूब बजाती थी वह —
अभी उमर में थी वह छोटी।
किन्तु पका लेती थी —
'शिशु' ले आती अगर सहेली।
खोल बूझती नई —
जब वर्षा का मौसम आता।
दादा से मँगवाती —
बढ़ता जभी अँधेरा घर में।
सो जाती छिप कर —

—श्रीनाथसिंह

बहुरूपी जल

आपने बहुरूपी आदमी तो देखा ही होगा—वही जो कभी बुड्ढा बनता है कभी साधू का भेस बनाया करता है। परन्तु पानी भी कैसे कैसे भेस बदला करता है, यह शायद आप न जानते होंगे। पानी कभी धुएँ का रूप बना कर आसमान में चढ़ जाता है, कभी बादल बन कर तरह तरह के रंग बदलता है, फिर कभी मेह बन कर धरती पर पानी बहा देता है। कभी यही पानी कोहरा बन कर चारों ओर अँधेरा छा देता है, कभी पत्थर की कंकड़ियों की नाईं आकाश से कड़कड़ा कर गड़गड़ा कर गिरने लगता है और कभी बरफ होकर पानी के ऊपर ऐसा जम जाता है कि उसके ऊपर आदमी सहज में चल फिर सकते हैं।

मेरी बातों को पढ़ कर आप अचरज मानते होंगे, परन्तु विज्ञानशास्त्र के पढ़ने से यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है। जो शास्त्र—ऐसे रूप क्यों बनते हैं, यह बात समझाता है उसी को

विज्ञान कहते हैं। पानी से बादल और मेह कैसे
होता है, पहिले इसी बात को सोचिये।

बादल या मेघ कुछ और नहीं, पानी ही का
एक रूप है। पानी से भाप बनती है, भाप ही
इकट्ठी होकर बादल कहलाती है, और वही चू
लगता है तो मेह कहलाता है। एक हँड़िया में
पानी गरम करो, तो उससे धुआँ निकलने
लगता है। यह धुआँ नहीं है। पानी गरमी पाकर
भाप के रूप में ऊपर उड़ने लगता है और हँड़िया
खाली होने लगती है। हँड़िया पर की इस
भाप में थोड़ी देर तक हाथ रखो तो हाथ भीग
जायगा और उस पर से पानी की बूँदें टपकने
लगेंगी—यहाँ भाप जम कर फिर पानी हो गयी।
यही भाप ऊपर चढ़ कर बादल बनती है। आस
मान में इतने बादल इकट्ठे हो जाते हैं, उसका
सबब यह है कि सूर्य्य की गरमी से जब समुद्र का
पानी गरम होता है तो उस से खूब हलकी
सी भाप उठने लगती है। यह इतनी हलकी
होती है कि बहुधा देख भी नहीं पड़ती। यही
भाप जब बहुत सी जमा होकर आकाश में

जमने लगती है तो बादल हो जाती है। सूर्य की
किरणों से बादल तरह तरह के रंग के जान
पड़ते हैं। ये बादल बहुत ऊपर नहीं होते,
पहाड़ों पर चढ़ने से वहाँ से नीचे की ओर लट-
कते देख पड़ते हैं। पहाड़ पर रहने वाले कहा
करते हैं कि कभी कभी बादल उड़ते हुए उनकी
कोठरियों में घुस आते हैं तो वहाँ की सब चीजें
भीग जाती हैं। ये बादल जब ठंढी हवा लग
कर भारी हो जाते हैं तो ऊपर नहीं ठहर
सकते, मेंह बन कर धरती पर बरसने लगते हैं,
इसी लिए बहुत दूर तक वर्षा होने लगती है।
अब देखिए, पानी बहुरूपी के से स्वांग रचा
करता है—वह गरमी पा कर भाप बनता है,
भाप जम कर बादल बनता है, फिर ठण्ढ पाकर
जब भारी होता है तो फिर धरती पर बरस
कर पानी बन जाता है। पानी और भी बहुत
से स्वांग रचा करता है जो फिर कभी लिखे
जायँगे।

वर्षा ऋतु

क्रम क्रम
क्रम क्रम
बीती गरमी
प्यारी वर्षा ऋतु आयी ।

झटपट
झटपट
काली काली,
घटा निराली घिर आयी ॥

रिम झिम
रिम झिम
पानी बरसे
जहाँ तहाँ जल-धार बही ।

सन सन
सन सन
शोर मचाकर
हवा नटी सी थिरक रही ॥

चम चम
चम चम
चमक रहे हैं,
जहाँ तहाँ जुगनू प्यारे ॥

तड़ तड़
तड़ तड़
तड़क रहे हैं,
गरज रहे बादल प्यारे ॥

लप लप
लप लप
लपक लपक कर,
बिजली छटा दिखाती है ॥

कुहु कुहु
कुहु कुहु
कोयल काली,
मीठे बोल सुनाती है ॥

टर टर
टर टर
मेंढक सारे,
इधर उधर टर्राते हैं।

पिउ पिउ
पिउ पिउ
करें पपीहा,
प्यारी रटन लगाते हैं॥

झुन झुन
झुन झुन
झींगुर सारे
प्रिय झङ्कार सुनाते हैं।

सुन सुन
सुन सुन
लख लख लख लख,
हम भी जी बहलाते हैं॥

—'स्वर्ण सहोदर'।

जादू की गेंद बुलाने का खेल

यह खेल दिखाने के लिए रबड़ की दो गेंद लो। एक पूरी और दूसरी आधी। ये दोनों गेंद ऐसी होनी चाहिएँ कि पूरी गेंद आधी गेंद में अच्छी तरह समा सके।

अब इन दोनों गेंदों को रँगों। आधी गेंद को लाल रङ्ग से रङ्ग दो और पूरी गेंद को दो रङ्गों में धारी देकर ऐसा रँगो जैसे खरबूजा होता है (देखो चित्र १-२) रँगते समय रंगों में गोंद जरूर मिला लो। जब सूख जायँ तो पूरी गेंद पर आधी गेंद को टोपी की तरह चढ़ा दो (देखो चित्र ३) और अपनी जेब में रख लो।

जब खेल दिखाना हो तो एक स्थान पर खड़े होकर गेंद को ऐसा पकड़ो कि देखने वालों को सिर्फ़ आधी गेंद दिखाई पड़े। यह गेंद लाल होगी। (देखो चित्र ४)

अब कहो—"यह लाल रंग की गेंद है पर यह बहुत खूबसूरत नहीं मालूम होती। अच्छा मैं

इस गेंद को कहूँगा कि यह दूसरी ऐसी गेंद बुलावे जिसमें धारियाँ भी हों, जो खरबूजे की शकल की हो।"

चित्र नं० १ नं० २ नं० ३

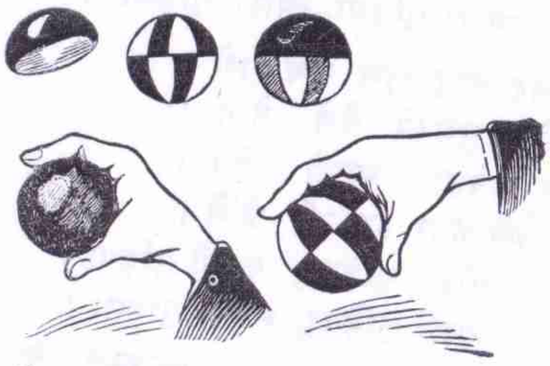

नं० ४ नं० ५

लोग यह सुन कर आश्चर्य करेंगे। पर तुम उनकी ओर ध्यान न दे दोनों हथेलियों में बन्द करके गेंद को घुमाओ (जैसे रोटी बनाने के पहले आटा घुमा कर गोल किया जाता हो) और कुछ मन्त्र भी पढ़ते जाओ।

इसके बाद शीघ्रता से पूरी गेंद को आधी गेंद में से निकाल लो और ऐसा पकड़ कर

दिखाओ कि दोनों दो अलग गेंद जान पड़ें (देखो चित्र ४-५)।

फिर कहो—"ऐं! यह फट कर दो टुकड़े तो नहीं हो गई? नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता।" यह कहते हुए पूरी गेंद देखने वालों की तरफ जमीन पर फेंक दो और कहो—"लो भाई देख लो? फिर न कहना कि आधी गेंद है।"

जब देखने वाले पूरी गेंद को देखने लगें तो आधी गेंद चुपके से जेब में खिसका दो। जब वह अपना सिर उठाएँ तो कहो—"ओह! लाल गेंद उड़ गई पर इससे क्या उसने अपनी जगह पर एक बड़ी खूबसूरत गेंद बुला तो दी।" लोग तुम्हारा मुँह ताकते रह जायँगे।

—राधाकृष्ण बी० ए०।

गुड़ियों का जगाना

लम्बी गुड़िया, छोटी गुड़िया ।
दुबली गुड़िया, मोटी गुड़िया ॥
गोरी गुड़िया, काली गुड़िया ।
प्यारी गुड़िया, न्यारी गुड़िया ॥

हुआ सबेरा आखें खोलो ।
कुरता पहिनो टोपी देलो ॥
चिज्जी खा लो पानी पी लो ।
हम भी खेलें तुम भी खेलो ॥
गोरी गुड़िया, काली गुड़िया ।
प्यारी गुड़िया, न्यारी गुड़िया ॥

चावल लाऊँ, पानी लाऊँ ।
बेसन लाऊँ, थाली लाऊँ ॥
भात बनाऊँ, कढ़ी बनाऊँ ।
तुम भी खाओ, मैं भी खाऊँ ॥
गोरी गुड़िया, काली गुड़िया ।
प्यारी गुड़िया, न्यारी गुड़िया ॥

जाऊँ फिर मैं ढोलक लाऊँ ।
धम धम धम धम उसे बजाऊँ ॥
तुम भी गाओ मैं भी गाऊँ ।
बढ़िया बढ़िया गीत सुनाऊँ ॥
गोरी गुड़िया, काली गुड़िया ।
प्यारी गुड़िया, न्यारी गुड़िया ॥

सुन कर बाबू खुश जब होंगे ।
हमको तुमको पैसे देंगे ॥
लड्डू पेड़ा बरफी देंगे ।
तुम भी लेना हम भी लेंगे ॥
गोरी गुड़िया, काली गुड़िया ।
प्यारी गुड़िया, न्यारी गुड़िया ॥

—"कमल" मिश्र ।

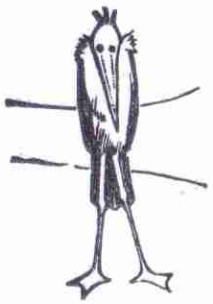

चित्रकार और मेंढक

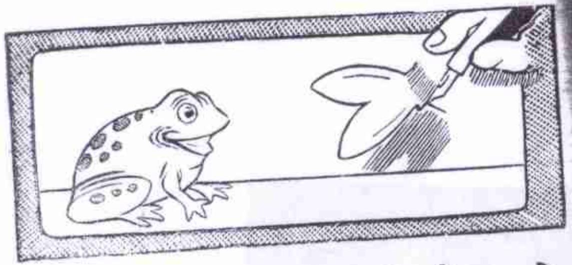

“अरे, बड़ी सुन्दर मक्खी है। इसे
जाऊँगा।”

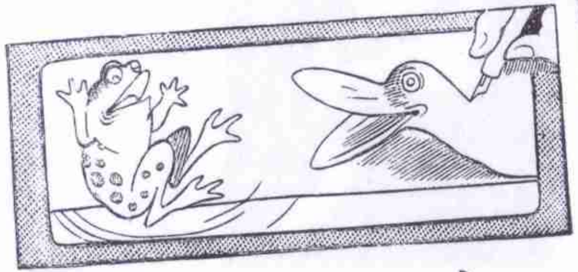

“ओ बाबा! यह तो बतख़ है। भागो
भागो !! भागो !!!”

——

भालू महराज

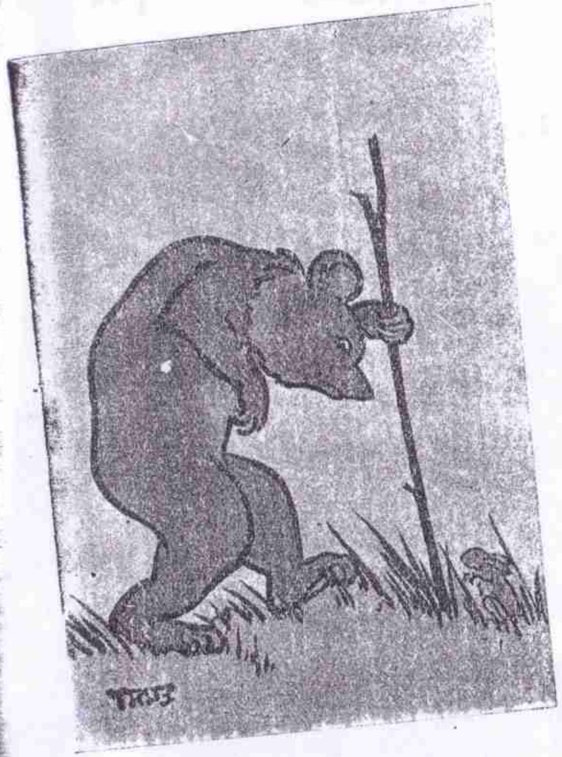

पंडा बन भालू महराज।
पैर पुजाने जाते आज॥

हमारी चित्रावली

नन्हें बाबू क्या करते हैं ।
सारे घर का मन हरते हैं ॥

सब की गोदी में जाती है ।
नहीं किसी से भय खाती है ॥

डरते हैं पर भूल रहे हैं।
खेल खिलौने भूल रहे हैं॥
जब न गोद में भी सुख पाते।
झूले में बैठाए जाते॥

ऐब दूर करने वाली गोलियां

किसी गाँव में एक गुरू जी रहते थे। किसी लड़के में कैसा भी ऐब क्यों न हो, वे फौरन दूर कर देते थे। इस काम में उनकी चातुरी देख कर लोग यह समझते थे कि उन्हें जादू जरूर आता है।

वे गाँव के बाहर एक झोपड़े में रहते थे। धीरे धीरे गाँव वालों को उनके जादू की बात मालूम हो गई थी, पर गोविन्द नामक एक लड़का था जिसे इसका कुछ भी पता न था।

एक दिन गोविन्द गाँव के बाहर कहीं घूमने जा रहा था। गुरू जी की खिड़की खुली थी। उसी में से उसने भीतर की ओर झाँका तो देखा कि गुरू जी खल में कोई चीज कूट रहे हैं।

गोविन्द ने कहा—"गुरू जी आप क्या कर रहे हैं?"

गुरू जी ने सिर ऊपर करके कहा—"गोलियाँ बना रहा हूँ। क्यों?"

गोविन्द ने कहा—"जुकाम की गोलियाँ, खाँसी की गोलियाँ ?

गुरू जी ने कहा—"नहीं मैं वैद्य नहीं हूँ, मैं लड़कों को पढ़ाता हूँ, जब उनके माँ बाप कहते हैं कि मेरा लड़का बड़ा ऐबी है, उसे ठीक कर दो, तो मैं इन्हीं गोलियों की मदद से उसका ऐब दूर कर देता हूँ।"

गोविन्द ने पूछा—"वह कैसे गुरू जी ?"

गुरू जी ने कहा—"मेरी इन गोलियों में जादू का असर है। एक फकीर से मैंने इनको बनाना सीखा है। इस समय मेरे पास कई तरह की गोलियाँ हैं। एक के खाने से लालच दूर हो जाता है, दूसरी के खाने से लड़का माँ बाप का कहना मानने लगता है, तीसरी के खाने से आलस दूर हो जाता है। इसी तरह बहुत सी हैं, क्यों तुम्हें भी कुछ चाहिये ?"

गोविन्द ने कहा—"नहीं मुझमें कोई ऐब नहीं है।"

गुरुजी बोले—"बड़ी खुशी की बात है। अच्छा अब यहाँ से चले जाओ क्योंकि मैं इन

जादू की गोलियों को किसी आदमी के सामने नहीं बनाना चाहता।"

जादू का नाम सुनकर गोविन्द के दिल में उन गोलियों को देखने की इच्छा हुई। इसलिये वह पास ही एक झाड़ी की ओट में छिप गया। गोलियाँ बना चुकने के बाद गुरू जी बाहर निकले और झोपड़े में ताला लगा कर न जाने कहाँ चले गये।

खिड़की खुली ही रह गई थी, बस गोविन्द उसी में से फिर झाँकने लगा। पर इस बार दियासलाई के डिब्बे के समान कागज के छोटे छोटे डिब्बों के सिवाय उसे फर्श पर और कुछ न दिखाई पड़ा। शायद इन्हीं डिब्बों में गोलियाँ हों यह सोचकर वह खिड़की पर चढ़ कर झोपड़े में घुस गया। सभी डिब्बों में गोलियाँ भरी थीं, सब को उसने खोल डाला और फर्श पर गोलियों का एक बड़ा ढेर लग गया। इसी समय उसको किसी के पाँव की आहट सुनाई दी। उसे कुछ डर मालूम हुआ। बस, उसने जल्दी जल्दी गोलियों को डिब्बों में भर दिया और खिड़की से कूद कर बाहर निकल गया।

इस बात को कई महीने बीत गये तो ... दिन गोविन्द फिर उसी रास्ते से निकला। ... बार उसने देखा कि गुरु जी सिर नीचा ... उसी कोठरी में बैठे हैं। गोविन्द को देखकर ... जी ने कहा—"गोविन्द, तुमने क्या कर डा... उस दिन से जब तुम मुझे दिखाई पड़े थे, ... गोलियों को न मालूम क्या होगया अब वे उ... असर करती हैं। जो ऐब छुड़ाने के लिए ... गोली देती हूँ वह नहीं छूटता, दूसरा ही छूट... है, तुमने मेरे घर में घुस कर गोलियाँ को मि... तो नहीं दिया है?"

गोविन्द ने कहा—"मुझसे क्या मतलब ... किसी के घर में बिना इजाज़त नहीं घुसता ...

गुरु जी ने सोचा शायद गोविन्द ... बोलता है इसलिए उन्होंने झूठ और बोलने ... करने की गोली बनाई और एक दिन गोविन्द ... मिठाई में खिला दीं।

गोली खाते ही गोविन्द ने मन ही ... कहा—"आह! मुझसे बड़ा अपराध हुआ, ... गुरुजी की गोलियाँ मिला दीं और ज...

...लाया भी नहीं। वे बेचारे बड़े दुखी हो ... रहे हैं।"

बस वह उसी दम गुरु जी के पास पहुँचा और रोकर बोला—"गुरु जी! मैंने आप की गोलियाँ मिला कर बड़ा भारी अपराध कर डाला ... मुझे क्षमा करें।"

गुरु जी ने खुश होकर कहा—"गोविन्द! अगर तुम यह अपराध न करते तो मैं संसार में झूठ बोलने की दवा कैसे बनाता? मैं तुमसे बड़ा खुश हूं।"

तब से गोविन्द कभी झूठ नहीं बोला।

—राधाकृष्ण बी० ए०।

——

मेंढक

किस तरह मेंढक फुदकता जा रहा,
देखने में क्या मज़ा है आ रहा।
कूदते चलते भला हो किस लिये?
तुम मचलते यों भला हो किस लिये?

बाप रे ! गिरना न थाली में कहीं,
दाल के भीतर खटाई की तरह।
हाथ में लो बैठ आओ, खेल लो,
साथ मेरे आज भाई की तरह॥
थे छिपे टर्रा रहे तुम तो कभी,
पर नहीं क्यों बोल सकते हो अभी।
बात हमसे क्या करोगे तुम नहीं ?
देख लो तुम तो भगे जाते कहीं॥
काम दोगे क्या लड़ाई में भला ?
बे भगे जाता नहीं तुमसे चला।
जब लड़ूँगा मैं कभी तलवार से,
देखना तब तुम मुझे बस चित्त दे॥
सीख जाओगे तभी लड़ना स्वयं,
और रिपु के सामने अड़ना स्वयं।
तुम न लुकना एक कोने में तभी,
कूद लो मन भर चलो भग लो अभी॥

—आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव

चुटकुले

माता—(पुत्र से) मुन्नू, तुम रोते क्यों हो ?

मुन्नू—मुझे आज गुरू जी ने मारा है।

माता—गुरू जी ने किस लिये मारा है ?

मुन्नू—क्योंकि मेरे सिवाय उनके प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे सका।

माता—वह प्रश्न क्या था ?

मुन्नू—उन्होंने पूछा था, "मेरी पगड़ी के सिरे में मेंढक किसने बाँधा है ?"

—लक्ष्मण स्वरूप गुप्त।

❀ ❀ ❀

रामू—श्यामू ! तुम में तो कुछ भी दम नहीं है। ज़रा सी दौड़ में ही तुम्हारी नानी मर गई।

श्यामू—मेरी नानी तो बहुत बूढ़ी हो जाने पर दमें के रोग से मरी थी, दौड़ में कब मरी ?

❀ ❀ ❀ ❀

एक मनुष्य पैर फिसल जाने से कीचड़ में गिर पड़ा। दूसरा हँस कर बोला--वाह ! भाई वाह !! कीचड़ में तो खूब गिरे।

पहला—अजी ! नहीं कीचड़ में क्यों गिरूँगा ! मैं तो अपने पैर की चिकनाई आजमा रहा था।

❀ ❀ ❀

गुरू जी—मोहन ! तुम्हारे बाबू जी कौन जात हैं ?

मोहन—कहार

गुरूजी—तब तो उन्हें दिन रात घड़ा ढोना पड़ता होगा, पर तुम तो पढ़ने के कारण एक दम बच गये।

मोहन--नहीं गुरू जी ! मैं कहाँ बचा, मुझे भी तो पुस्तकें ढोनी पड़ती हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

"राम ! कबूतर पर लेख लिख कर लाये।" शिक्षक ने पूछा।

"नहीं !"

"क्यों नहीं लाये ?"

"मैं ज्योंही कलम, दवात और कागज लेकर कबूतर के पास बैठा था त्योंही वह उड़ गया।"

—सुशीला कुमारी देवी माहेश्वरी।

❀ ❀ ❀

एक दिन पण्डित जी ईश्वर के रूप का वर्णन कर रहे थे—"पृथ्वी पर जितने पहाड़ हैं वे ईश्वर की हड्डियाँ हैं, जो श्याम वर्ण आकाश देखते हो वह उनका शरीर है और सूर्य और चन्द्रमा जो तुम देखते हो वे उनकी दो आखें हैं।"

एक बालक बात काट कर बोला—"पण्डित जी ! आप तो कहते थे कि भगवान का शरीर बहुत सुन्दर है। मगर वे तो काने निकले। क्योंकि दिन के समय में तो वह एक ही आँख (सूर्य्य) से देखते हैं और रात का भी वही हाल है।"

—बिशनदयाल अग्रवाल।

❀ ❀ ❀ ❀

किसी कञ्जर के लड़के का बताशा पानी के घड़े में गिर कर घुल गया। घड़े में झाँक कर देखने से उसने घड़े में अपनी परछाँई देखी। समझा कि घड़े में कोई आदमी है जिसने मेरा

बताशा खा लिया। लगा मियाँ को पुकारने कि अब्बा! अब्बा! इस घड़े के आदमी ने मेरा बताशा खा लिया। कञ्जर ने आकर जो घड़े में झाँका तो अपनी दाढ़ी और चेहरे की परछाँई देख कर वह बोला--"मियाँ! लड़कों से भी हँसी किया करते हो?"

—कामताप्रसाद अग्रवाल।

❀ ❀ ❀

किसी गाँव में एक पंडित रहा करते थे। उनके तीन लड़के थे। उनमें से पहिले लड़के का मोहन, दूसरे का नाम सोहन और तीसरे का नाम जगमोहन था। ये तीनों लड़के तुतलाकर बोला करते थे। इनके बड़े होने पर इनके पिता ने इनकी शादी करने का विचार किया। नाई के आने पर पिता ने लड़कों को समझा दिया था कि तुम लोग नाई से बात मत करना। पर जब नाई ने बड़े बेटे से कहा--"मोहन! तुम हमको बहुत अच्छे लगते हो।"

तब मोहन बोल उठा--"अवी टन्डन टी टिवटिया टो लटाई नईं ए नईं टो और अट्टे लट्टे।"

(अभी चन्दन की टिवकिया तो लगाई नहीं है नहीं तो और अच्छे लगते)

सोहन--डड्डा ने टाय टई टी टे टोलियो मट। (दद्दा ने क्या कही थी कि बोलियो मत)।

जगमोहन--टुमबोले, टुमबोले, हम टुपई टाप। (तुमबोले, तुमबोले, हम चुपचाप।)

--अनन्तराम मिश्र।

❀ ❀ ❀ ❀

मास्टर—राम! मेज़ पर यदि पाँच लड्डू हों तो?

राम—घी के बने हुए या तेल के।

मास्टर—बेवकूफ़! सुनो मेज़ पर पाँच लड्डू हों और तुम्हारी बहिन उसमें से एक खा जाय तो बाकी—।

राम—जी, आप मेरी बहिन को नहीं जानते हैं, वह एक नहीं सब खा लेगी।

मास्टर—यदि वह एक ही खाय तो बाकी कितने रहेंगे?

राम—खाल थाली रहेगी ।
मास्टर—कैसे ?
राम—बाकी सब मैं खा जाऊँगा ।

—जे० कृष्णमूर्ति ।

सच्ची बात

आओ मेरे प्यारे भाई !
खायें मिलकर खूब मिठाई ॥

मीठे मीठे लड्डू खायें ।
पढ़ने फिर स्कूल को जायें ॥

पेट भरे तो काम करें हम ।
दरजे में फिर नाम करें हम ॥

टीचर को खुश रखना अच्छा ।
पढ़ना अच्छा लिखना अच्छा ॥

बात यह सची क्यों न कहें हम ?
खेल कूद से दूर रहें हम ॥

—गनेशप्रसाद टण्डन ।

[हमारे पास हर महीने बालकों की कुछ ऐसी चिट्ठियाँ आती रहती हैं जिनके पढ़ने में बड़ा मज़ा आता है। ये ही चिट्ठियाँ इस कालम में पाठकों के मनोरञ्जन के लिये छापी जाती हैं। बालक चिट्ठी खूब सोच समझ कर लिखें, क्योंकि चिट्ठियाँ बिलकुल ज्यों की त्यों छापी जाती हैं। कोई भूल होगी तो लोग उन्हीं की हँसी उड़ावेंगे। — 'शिशु-सम्पादक ।]

(१)

सम्पादक जी, प्रणाम !

मेरा नाम ठाकुर परसाद है । मै बाबू बिसम्भर परसाद का भतीजा हूँ । चाचा जी हमको बहुत मानते हैं । उनने हमरे लिये एक कठघोड़ा खरीद़ा है । हम उस पर खूब चढ़ते हैं । आप

हमको चढ़ते देखते तो बहुत खुसी होते। आप कठघोड़ा पर चढ़ते हैं या नहीं सो जरूर लिखेंगे।

—ठाकुर परसाद मेहरोत्रा, पटना सिटी।

[हम कठघोड़ा पर नहीं, कठहाथी पर चढ़ते हैं।]

(२)

श्री सम्पादक जी, प्रणाम!

यह तो बताओ कि आप ने मेरा नाम अपनी किताब का क्यों रख लिया? नानी जी मुझे शुशु कहा करती हैं। आपने मेरा नाम छीन लिया। मुझे सब लोग खिजाते हैं तेरा नाम छिन गया।

—शशीप्रकाश, मेरठ।

[हमारे 'शिशु' की उमर ११ साल की है। आप की शायद इससे कम होगी? तब नाम हमने छीना या आप ने।]

(३)

श्री सम्पादक जी!

मेरा एक कुत्ता है उसके दोनों कानों में मिड़ला (एक प्रकार के कीड़े) लग गये हैं जिससे मेरे सहपाठी मुझे चिढ़ाया करते हैं कि बेनीप्रसाद बहुत बड़े आदमी हैं कि जो कुत्ते को

तो मोतियों का झुमका (गुच्छा) पहनाये हैं और आप नंगे कान किये हैं।

—बेनीप्रसाद कुरमी।

[बड़े आदमियों की यही तो तारीफ है कि खुद न पहिन कर औरों को पहनाते हैं]

(४)

श्री सम्पादक जी!

मैं शिशु का ग्राहक हूँ। जब तक शिशु नहीं आता तब तक मुझे चैन नहीं पड़ती मैंने मई जून के शिशु में कंजूसों की कहानी और चुटकुले पढ़ कर अपनी माँ और बहिनों को सुनाया। वे खूब खिल खिला कर हँसी। मुझे शिशु इतना प्यारा है कि मैं उसे दिन रात साथ लिये रहता हूँ और जो मेरे दोस्त मिलते हैं उनको पढ़ कर सुनाता हूँ।

—पन्नालाल कटकवार, सिरपन।

[आप बहुत अच्छा करते हैं]

(५)

श्रीमान् सम्पादक जी

हमारे यहाँ स्कूल के पीछे हसदो नदी बहती है और आजकल बहुत बड़ी है मैं मेरी मुआ के

साथ रोज नहाने जाती हूँ। नहाने जाऊँ कि नह
मेरी छोटी बहिन बसन्ती बहुत रोया करती
मनाने से धूल में लोटने लग जाती है।

—कस्तूरी बाई, चांपा

[जैसा 'मुन्ना' कहें]

(६)

श्रीमान सम्पादक जी,

मेरी छोटी बहिन दुरगा आज रोटी खा
समय मुझसे पूछती थी कि माँ जब हंडी में रा
को दूध डालती तो उसका सबेरे दही क्यों
जाता है और फिर मथने से उसमें से मक्ख
क्यों निकलता है। अब मेरी समझ में न
आता कि उसका क्या उत्तर दिया जाय।

—सुबोधचन्द्र मिश्र, मुँगेली

[माँ से ही पूछो यदि न बतावें तो हमें लिखो।]

(७)

श्रीमान सम्पादक जी, जैरामजी की!

मैं चाहता हूँ कि जैसे सब लोग 'शिशु'
चाहते हैं वैसे मुझे भी चाहें इसीलिये साफ

रहता हूँ रोज नहाता हूँ खूब पढ़ता हूं पर मुझे
कोई नहीं चाहता इसलिये बतलाइये कि आपका
शिशु क्या करता है?

—महेशदत्त मिश्र।

[सब का मन बहलाता है।]

(८)

ऐसी तरकीब बताईये जिसमें से कोई मेरे
कोट में से पैसे न निकाले।

—श्रीराम ठाकुरद्वारा।

[कोट को सन्दूक में बन्द करके रखिए]

(९)

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते—

आप का शिशु आया मुझे उसकी कछुआ
और खरगोश की कहानी बहुत पसन्द आई
अगिले भादों के महीने मे मेरी ताई जी की
बर्षी होगी यह चिट्ठी लिख कर आप के लिये
नोता भेजती हूँ आप 'शिशु' के सब पढ़ने वालो
को नोता भिजवा देना मे बहुत खुशी होऊँगी
सब लोगों को साथ लिवा कर आप जरूर २
आना। अच्छा। सावन का महीना है मेरे

चचा जी ने बाग में झूला भी डलवा दिया है पर पानी रोज २ बरसता है इससे झूला झूलने की बड़ी छीछालेदर रहती है।

आप की पुत्री
रत्नकुँवरि करसौलिया, रुधैनी

[सब को न्योता दे दिया है। खूब पूरी मिठाई बनवा कर रखना

(१०)

सम्पादक जी, नमस्ते!

मेरी नानी कहती है के तेरा ब्याह मैं एक कुतिया के साथ करूँगी मेरी जान तबाई में आ रही है और मेरी उम्र बारा बरस की है इसलिये छोटा समझ कर कोई भी मेरी नही सुनटा।

—रवी कुवांर, मेरठ

[तो क्या हर्ज है। ब्याह से मतलब]

अनोखी बातें

नारियल से मोती

मलाया प्रायद्वीप में सेलीबीज नामक एक टापू है। यहाँ नारियल (गोले) खूब होते हैं और बड़ी दूर दूर जाते हैं। इन्हीं नारियलों में से अक्सर मोती निकलते हैं। एक बार एक अण्डे के बराबर मोती एक नारियल में से निकला था।

× × × ×

तीस करोड़ मछलियाँ

इंग्लिस्तान के यार माउथ नामक नगर में एक सप्ताह में ३०००००००० मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

× × × ×

सब बड़ी सुरंग

संसार में सब से बड़ी सुरंग अमेरिका के न्यूयर्क नगर में है। इसकी लम्बाई १८½ मील है।

× × × ×

दो ढाँचे

क्रोमिया की एक गुफा में मनुष्य के शरीर के दो ढाँचे मिले हैं। विद्वानों का कहना है कि ये पचास हजार बर्ष पुराने हैं।

× × × ×

शरीर की विचित्रता

हर १५ आदमियों में से १४ आदमियों की आँख में कोई ऐब होता है।

१०० में से ५४ आदमियों की बाईं टाँग दाहिनी से मज़बूत होती है।

× × × ×

घोंघा

घोंघा चौदह दिन और पाँच घण्टे में एक मील चल सकता है।

बाल-समाचार

[यहाँ केवल वे समाचार छापे जाते हैं जो हमारे छोटे पाठक चारों तरफ से भेजा करते हैं —शिशु सं०]

—छबड़ा के विनोदी लाल शर्मा ११ साल के हैं पर अब भी आप हवा खोरी के समय रास्ता भूल जाते हैं।

—कृष्णप्रसाद (फैजाबाद) का छोटा भाई बल्लू पढ़ने से हमेशा जी चुराता है।

—ठाकुरद्वारा के श्रीराम साहू को उनके बाप बुरे खिलौने मँगाते हैं।

—कुशलेश्वर प्रसाद (सोनीपत) के पिता ने उन्हें दूसरों की सेवा करना किसी से, लड़ना, झूठ न बोला आदि चार बातें बताई हैं।

—चौरीचौरा के किसोरी लाल बहुत मारे जाते हैं।

—रामलली बाई (हरदा) अपनी गुड़ियों की शादी बरसात ही में करना चाहती हैं।

—काशीनाथ (मोहम्मदाबाद) का छोटा भाई एक साल का है पर बड़ा बदमास है।

—महेन्द्र नाथ शर्मा का एक मित्र बड़ा चिलबिला है।

—गोरख शरण (हरदोई) इनाम नहीं पाते।

नई पहेलियाँ

(१)

मुँह काला पर आदर भारी।
उसके वश है दुनिया सारी॥

(२)

हरा हाथ में, मुँह में लाल।
क्या है ? बतलाओ तत्काल॥

(३)

बादल में रहने पर भी मैं
मिला धूल में हूँ भगवान।
य र ल व तक पढ़ते ही
मुझे सभी लेते पहचान।

सूचना—ऊपर की तीन पहेलियों में से जिसके सब उत्तर ठीक होंगे उनमें से तीन को पुरस्कार मिलेगा और बाकी बालकों के नाम छपेंगे।

पिछली पहेलियों के उत्तर

(१) कुरसी या खाट। (२) कंघी। (३) ४ रोटी। (४) आठ आना।

दो बालकों को पुरस्कार मिला

(१) पुत्तनलाल विद्यार्थी, लखनऊ।
(२) ऋषिराज विद्यार्थी, नजीबाबाद।

अन्य उत्तर-प्रेषक—

चौबे बारीन्द्र कुमार, छिबरामऊ। श्रीकान्त दीक्षित, लखीमपुर। राधाकृष्ण टण्डन, फैज़ाबाद। कस्तूरचन्द, सनावद। बैजनाथ कपूर, बनारस। राममोहन, नैनीताल। अनन्तोभान पाण्डे, आगरा। गनपत लाल, कोटा। शंकर सिंह, रामपुर। ऋषिशंकर दूबे, फ़र्रुखाबाद। लूनकरन मंगल चन्द,

गंगाशहर। ओंकारमल, बहल। विक्रम सिंह, दुर्ग। रघुबीर शरन, आगरा। त्रिभुवन नाथ, रतलाम। बासुदेव विद्यार्थी, उज्जैन। फूलचन्द, गोंदिया। सत्यवतो देवी, होशंगाबाद। धर्मेन्द्र कुमार, अहीरपुर। कैलास सिंह, बलिया। अमरनाथ, मेरठ। शीतल चन्द्र, आगरा। पन्नालाल भार्गव, सिवनी। परमानन्द राठी, रामपुरा। बिहारी लाल विद्यार्थी, कोरबई। सूरत प्यारी, लायलपुर। रोशन लाल, सरगोधा। क्षेत्रपाल सिंह, बिहानी। रमेशचन्द्र महेशचन्द्र, फर्रुखाबाद। कुँ० राम प्रताप सिंह, आगरा। कल्याण मलटोप्या, इन्दौर। कस्तूर चन्द टोप्या, इन्दौर। रत्नकुँवरि करसौलिया, सिरसागंज। लोकमणि दास, आगरा। मदन लाल जोशी, नवलगढ़। धर्मवीर राय, मेरठ। पारसनाथ पाण्डय, मोताहारी। गोदावरी देवी, लश्कर। शान्तिदेवी, हरदोई। मणिशंकर, उज्जैन। गप्पू लाल, ग्वालियर। अम्बिका प्रसाद, रायगढ़। शान्तिश्याम, प्रयाग। पुरुषोत्तम, धामनगाँव। कस्तूरी बाई, चाँपा। कृष्ण बिहारी, देवरिया। मनोहर लाल, टाढ़ा। विष्णु गुप्त, हिसार। शिवराजबहादुर, एटा। रामेश्वर दयाल, भरथना। कैलाश चन्द्र, बाँदा। कुमारी सीतदेवी, फतेहपुर। महेन्द्र नाथ, बड़वानी। शकुन्तला देवी, फिरोजपुर। कमला देवी, बिहार शरीफ। राजेन्द्र प्रसाद, मुरादाबाद। मदनमोहन, इटावा। पन्नालाल, कासगंज। इन्दरसिंह, इलाहाबाद। मातादीन सेठ, झाँसी। शान्ती देवी, बरेली। सोहन सिंह, खुरजा। लक्ष्मीकांत, मेरठ। परमेश्वरी देवी, गोलागंज। श्रीरामनरायण, मुजफ्फरपुर। धर्मपाल वर्मा, आगरा। पूर्णदेव सक्सेना, हरदोई। अबदुल कादर, सनावाद। घासीराम, हरदा। सरस्वती देवी, बिजनौर।

रविन्द्र प्रसाद, पटना। महेन्द्रलाल, झरिया । शिवकुमार
बलिया। विद्याकुमारी, छपरा । यतीश प्रसाद, नैनीताल
राधाकृष्ण अग्रवाल, बालाघाट। कुँअर कन्हैयालाल, देहरादून
जुगरानी देवी, कामटी। जगदीशवर प्रसाद मितल, देहरादून
अनोखेलाल, मालवा। राधेश्याम, हरदा। प्रेमचन्द्र खन्ना
बिजनौर । पिरथीनाथ खन्ना, बिजनौर । रामप्रताप शर्मा
विलासपुर। शंकरलाल, कटनी। जागेश्वर प्रसाद, फतेहपुर
विष्णुदत्त दूबे, खंडुवा। दामोदरदास अग्रवाल, काशी। लक्ष्मी
नारायण डाले, हरदा। जीवनलाल, रायपूर। गोविन्द प्रसाद
अग्रवाल, जबलपूर। बाबूलाल, अलीगढ़। साह सीताराम
पटना। राज़कुमार, कलकत्ता। सरस्वती देवी झाँसी। रामेश्वरी
देवी, लखनऊ । प्रीथीनाथ, आगरा। शोभराज, मथुरा
विश्वनाथ टंडन, काशीपुर । कुमारी मोहनी देवी, दारागंज
गोविन्दलाल, इटावा। मुलायमचन्द्र, कटनी। सत्यवती देवी
मैनपुरी। मुरलीधर, कटनी। कृष्णकुमारी, कानपुर। कालू
धन्नालाल, मुड़वारा। भाग्यवती देवी, भूपाल। प्रतापनारायण
जबलपूर । केशो देवी, कलकत्ता । परमानन्द, रायपुर
वीरेन्द्र, बनारस। दयास्वरूप, मेरठ। भरोस शंकर, उज्जैन
उमाशङ्कर तिवारी, जबलपुर। श्री० उमा सुन्दरी देवी, बनारस
प्रेमलाल भाटिआ, लाहौर। प्रेमप्यारी देवी, बनारस। सतीश
चतु०, कुरावली। श्री मन्दरदास, मेरठ। दर्शनलाल, बरौत
मदनमोहन, बुलन्दशहर। गंदलाल, सिवनी। मिश्री प्रसाद
भगवानपुर। शिवनरायन, हमीरपुर । कन्हैयालाल
चम्पारन । कामेश्वर प्रसाद, बलिया। लीलावती
मेरठ। महेशदत्त मि०, हरदा। शीलवती धौलपूर। सुबोध

मित्र, विलासपूर। माधोचन्द्र सरन, मुरादाबाद। कैलाश
रानी, नैनीताल । जयविहारीलाल, नैनीताल। श्यामकुंवर,
मथुरा । शोभाराम शर्मा, देववन्द। रामेश्वरी, सिरीनगर।
सुकदेव पति, बरार। कयाशेर सिंह, अमृतसर। प्यार सिंह
मोहन सिंह, धार। कुमारी सत्यवती, बहावलपुर स्टेट।
नरसिंह बहादुर, शाहाबाद । सीता देवी, गोन्दलावाला।
रामशंकर विद्यर्थी, शाहजहाँपुर। मथुरा प्रसाद, फैजाबाद।
नारायणदास सिंगी, इन्दोर कृष्ण मान्डालेक धार स्टेट। शिव
शंकर लाल विद्यार्थी, मंडला। नत्थ गोपालदास विद्यार्थी, आज़-
मगढ़ । नारायण दास, मिरज़ापुर। हेमचन्द्र जैन, जैपुर।
लखमीचन्द दुगड़, बीदासर। कुमारी विमला स्याल, अम्बाला।
रामानुज प्रसाद भट्ट, रीवाँ। जयदेव सिखैया, बेतूल। जगन्नाथ
प्रसादसिंह विद्यार्थी, भागलपुर । कुन्दन लाल, नागपुर।
सावित्री देवी, फिरोजपुर, शान्तीदेवी फिरोजपुर। वेङ्कटेश्वर
प्रसाद विद्यार्थी, दरभंगा। गंगामहेश शुक्ल, फर्रुखाबाद। गाव-
र्धन दत्त शर्मा, जयपुर। इन्द्रकृष्ण, नागपुर । शिवकुमार
मिश्र, होशंगाबाद। मदनलाल, भरतपुर। चन्द्रमोहिनी, श्री-
नगर। श्रीराम शर्मा, अमृतसर। ज्ञानचन्द्र शुक्ल, छिबरामऊ।
अब्दुलरज़ाक विद्यार्थी, रायपुर। अवधकिशोर प्रसाद, खग-
ड़िया। उदितनरायन, हमीरपुर। शिवनन्दन प्रसाद, दरभंगा।
कनककली देवी, प्रयाग। लक्ष्मन गुप्त सिंहल, गजियाबाद।
ज्ञानचन्द अग्रवाल, जबलपुर । भगवानदास कलकत्ता ।
मोहनदयाल अग्रवाल, कलकत्ता। हरीमोहन, धोलपुर। सतीश
चन्द्र, बदाऊं। जगदीश चन्द्रशाह, अलमोड़ा। कुंवर गङ्गाबहा-
दुर सिंह, सीतापुर। गोविन्द लाल, इटावा।

शिशु
की
पुरानी फाइल

सन् १९२४ की फाइल तैयार है। मूल्य
साधारण जिल्द ... ... २)

मिलने का पता—मैनेजर 'शिशु', इलाहाबाद।

ग्राहकों को चाहिए

कि जब किसी प्रकार का पत्र व्यवहार किया करें तो कृपा कर अपना ग्राहक नम्बर और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक नम्बर के लिखे हुए इतने ग्राहक समूह में उनका पता लगाना कठिन हो जाता है क्योंकि एक नाम के कई कई ग्राहक हैं।

पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक नम्बर भी लिखा करें। ग्राहक नम्बर हर हालत में लिखना ज़रूरी है।

मैनेजर, "शिशु" इलाहाबाद।

कौन नहीं जानता ?

हिन्दी में स्त्रियों की सब से अच्छी, सबसे सस्ती और सचित्र मासिक पत्रिका

गृहलक्ष्मी

सत्रह वर्षों से स्त्री-शिक्षा का प्रचार कर रही है। वार्षिक मूल्य ३) रु० है। आज ही ।=) का टिकट भेज नमूना मँगा देखिये।

श्रीमती गोपालदेवी,
'गृहलक्ष्मी'—कार्य्यालय,
इलाहाबाद।

शिशु-संगीत

—:o:—

शिशुओ ! 'शिशु' को अपनाओ । (टेक)

शुभ-चिन्तक है यही तुम्हारा इसे न नेक भुलाओ।

काटेगा यह उर की जड़ता नित नव प्रेम बढ़ाओ।

स्वार्थ रहित हो सेवा करता, आओ हाथ बटाओ।

गणित, काव्य, विज्ञान, कथादिक इसमें पढ़ो पढ़ाओ।

तन, मन, धन सबका साधक है, एकबार अजमाओ।

कलित ललित चित्रों को देखो, अपना मन बहलाओ।

रोज नया आनन्द मिलेगा वी० पी० आज मँगाओ।

आवश्यकता है

—:o:—

"शिशु" का प्रचार करने के लिए प्रत्येक नगर में एजेण्टों की आवश्यकता है। इस लिए जो लोग "शिशु" की एजेन्सी लेना चाहें उन्हें शीघ्र ही कार्य्यालय से लिखा पढ़ी करनी चाहिए।

एजेण्टों को कमीशन भी भरपूर दिया जायगा।

पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर "शिशु"

इलाहाबाद।

क तथा प्रकाशक-पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० सुदर्शन प्रेस, प्रयाग।